

हमारा-युग-निर्माण-सत्संकल्प

[Brief](#)

[Shorter](#)

[Longer](#)

१. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

२. शरीर को भगवान् का मन्दिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

३. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

४. इन्द्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत अभ्यास करेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

५. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

६. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

७. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

८. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

९. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे। [Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१०. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्बिचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

११. दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१२. नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१३. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१४. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१५. सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१६. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१७. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)

१८. हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

[Brief](#) [Shorter](#) [Longer](#)